SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षा की भूमिका–एक अध्ययन

श्रीमती नीलम, शोधार्थी, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला यूनिवर्सिटी चूडेला, झुंझुनू राजस्थान
ड़ॉ अनीता शर्मा, शोध निर्देशक, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला यूनिवर्सिटी चूडेला, झुंझुनू राजस्थान
Email-chauhanneelam2008@gmail.com

सारांश

संवेगों का शिक्षा में बहुत महत्व हैं इसलिए बालकों की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिर्वतनों की समझ शिक्षकों के लिए आवश्यक है।प्रारम्भिक बाल्यावस्था में संवेगों की आवृति और उनकी तीव्रता अधिक होती है इसका कारण मनोवैज्ञानिक होता है।इसी अवस्था में बच्चों और अभिभावको के बीच विरोध की स्थिति पाई जाती है।बाद की अवस्था में पैदा होने वाले संवेगों के लिए इस अवस्था के संवेग आधारभूत होते है।नर्सरी स्कूलों मे प्रवेश के माध्यम से उनका सही प्रकार से मार्गदर्शन किया जा सकता है ।उत्तर बाल्यावस्था में बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख लेता है।उसमें अच्छे और बुरे की समझ उत्पन्न हो जाती है।इस अवस्था में विशिष्ट बालको जैसे उपद्रवी,शान्त बालक,समस्यात्मक बालक की पहचान करके ,संवेगों के अनुसार मार्गदर्शन किया जा सकता है।किशोरावस्था में जंहा बालकों में संवेगात्मक परिपक्वता आ जाती है वहीं आर्थिक,सामाजिक,पारिवारिक,वातावरणीय व मनोवैज्ञानिक कारण तनाव के कारण हो सकते है।संवेग लक्ष्यों को निर्धारित करने के साथ साथ कार्य करने के लिए भी प्रेरित करते है।संवेग दो प्रकार के होते है धनात्मक और ऋणात्मक।प्रेम,हर्ष,स्नेह,संतोष आदि धनात्मक संवेग होते है जब्कि तनाव,चिंता, क्रोध आदि नकारात्मक संवेग है। जिनसे बालकों में चिडचिडापन ,एकांत में रहने की प्रवति , आक्रामक मनोवति और समायोजन में कठिनाई आती है।शिक्षा के माध्यम से संवेगों का संसोधन करके उन्हें उचित दिशा प्रदान की जा सकती है,अच्छी आदतों का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षक बालकों में उत्पन्न संवेगों को अन्तःक्रिया के माध्यम से पहचानकर निर्देशन प्रदान करते हैं।अतः संवेगों का विकास शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है।

मुख्य शब्द–बालक,संवेगात्मक विकास,शिक्षा,उपयोगिता